सूर्यबाला के कथा साहित्य में अभिव्यक्त चेतना के विभिन्न संदर्भ

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

पी एच. डी हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की रूपरेखा

सत्र

2019-20

शोधार्थी

दिपाली मिरेकर

शोध – निर्देशक

डॉ. नामदेव. एम. गौडा

प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष

डॉ. नामदेव. एम. गौडा

प्रोफेसर

हिंदी अध्ययन विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय,

विजयपुर 586108

सूर्यबाला के कथा साहित्य में अभिव्यक्त चेतना के विभिन्न संदर्भ

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय- चेतना : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रकार

1.0 प्रस्तावना

1.1 चेतना शब्द का अर्थ

1.2 चेतना शब्द की परिभाषा

1.3 चेतना का स्वरूप

1.4 चेतना के प्रकार

1.4.1 सामाजिक चेतना

1.4.2 सांस्कृतिक चेतना

1.4.3 राजनैतिक चेतना

1.4.4 धार्मिक चेतना

1.4.5 आर्थिक चेतना

1.4.6 राष्ट्रीय चेतना

1.4.7 व्यक्तिवादी चेतना

1.4.8 नारी चेतना

1.4.9 दलित चेतना

1.5 साहित्य और चेतना का अंतःसंबंध

1.5.1 आदिकालीन साहित्य के संदर्भ में

1.5.2 भक्तिकालीन साहित्य के संदर्भ में

1.5.3 रीतिकालीन साहित्य के संदर्भ में

1.5.4 आधुनिककालीन साहित्य के संदर्भ में

1.6 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - समकालीन महिला कथाकार एवं सूर्यबाला

2.0 प्रस्तावना

2.1 समकालीनता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

2.2 समकालीन साहित्यिक परिस्थितियाँ

2.3 समकालीन महिला कथाकारों का साहित्यिक परिचय

2.3.1 कृष्णा सोबती

2.3.2 उषा प्रियंवदा

2.3.3 दीप्ती खंडेलवाल

2.3.4 मन्नु भंडारी

2.3.5 मालती जोशी

2.3.6 राजी सेठ

2.3.7 मंजुल भगत

2.3.8 मृदुला गर्ग

2.3.9 ममता कालिया

2.3.10 सुनिता जैन

2.3.11 प्रभा खेतान

2.3.12 चित्रा मुदगल

2.3.13 मेहरुन्निसा परवेज

2.3.14 मैत्रेयी पुष्पा

2.3.15 सुधा अरोड़ा

2.3.16 मंजू सिंह

2.3.17 नासिरा शर्मा

2.3.18 सुशीला टाकभौरे

2.3.19 मधु कांकरिया

2.3.20 शिवानी

2.4 समकालीन महिला कथाकारों में सूर्यबाला का स्थान

2.5 सूर्यबाला का जीवन परिचय

2.6 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

3.0 प्रस्तावना

3.1 सामाजिक चेतना की अवधारणा और स्वरूप

3.2 सूर्यबाला के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना के विभिन्न संदर्भ

3.2.1 परिवार

3.2.2 परिवार का अर्थ, स्वरूप और वर्गीकरण

3.2.3 आधुनिक समाज व्यवस्था में परिवार वर्गीकरण

3.2.3.1 संयुक्त परिवार

3.2.3.2 एकल परिवार

3.2.4 परिवार की विशेषताएँ

3.2.5 पारवारिक संबंध और समस्याएँ

3.3 विवाह

3.3.1 प्रेम संबंध

3.3.2 दांपत्य जीवन

3.3.3 विवाह विच्छेद

3.4 पीढ़ी का अंतराल

3.4.1 पुरानी पीढ़ी

3.4.2 आधुनिक पीढ़ी

3.4.3 युवा पीढ़ी का संघर्ष

3.4.4 पुरानी और आधुनिक पीढ़ी : सामरस्य और संघर्ष

3.5 शैक्षणिक तत्वों में विघटन और विफलताएँ

3.6 ग्रामीण और महानगरीय जीवन

3.7 समकालीन महिला कथाकार

3.8 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना

4.0 प्रस्तावना

4.1 आर्थिक चेतना की अवधारणा और स्वरूप

4.2 सूर्यबाला के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना के विभिन्न संदर्भ

4.2.1 वर्ग भेद

4.2.1.1 उच्च वर्ग

4.2.1.2 मध्य वर्ग

4.2.1.3 निम्न वर्ग

4.2.2 आर्थिक विषमता के कारण परिवारों का विघटन

4.2.3 आर्थिक विसंगति और बेरोजगारी

4.2.4 भ्रष्टाचार एवं सामाजिक विघटन

4.2.5 बाल मजदूरी

4.3 समकालीन महिला कथाकार

4.4 निष्कर्ष

पंचम अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में धार्मिक चेतना

5.0 प्रस्तावना

5.1 धार्मिक चेतना की अवधारणा और स्वरूप

5.2 सूर्यबाला के कथा साहित्य में धार्मिक चेतना के विभिन्न संदर्भ

5.2.1 धर्म और आध्यात्म

5.2.2 जातिवाद

5.2.3 धर्म और स्त्री

5.2.4 अंधविश्वास, पाखंड एवं कुरीतियाँ

5.3 समकालीन महिला कथाकार

5.4 निष्कर्ष

षष्ठम अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

6.0 प्रस्तावना

6.1 सांस्कृतिक चेतना की अवधारणा और स्वरूप

6.2 सूर्यबाला के कथासाहित्य में सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न संदर्भ

6.2.1 भारतीय समाज

6.2.2 पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

6.2.3 मानवीय मूल्यों का ह्रास

6.2.4 मानव संबंधों में विघटन

6.3 समकालीन महिला कथाकार

6.4 निष्कर्ष

सप्तम अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में व्यक्तिवादी चेतना

7.0 प्रस्तावना

7.1 व्यक्तिवादी चेतना की अवधारणा और स्वरूप

7.2 सूर्यबाला के कथा साहित्य में व्यक्तिवादी चेतना के विभिन्न संदर्भ

7.2.1 बालमनोविज्ञान

7.2.2 छात्र जीवन

7.2.3 हताशा, निराशा एवं कुंठा

7.2.4 वैयक्तिक अहं

7.2.5 अकेलापन

7.2.6 अपराध बोध

7.3 समकालीन महिला कथाकार

7.4 निष्कर्ष

अष्ठम अध्याय- सूर्यबाला के कथा साहित्य में नारीवादी चेतना

8.0 प्रस्तावना

8.1 नारी चेतना की अवधारणा और स्वरूप

8.2 साहित्य में नारी सृजनशीलता और चेतना : इतिहास के पन्नों से वर्तमान तक

8.3 मानवाधिकार एवं महिलाएँ

8.4 सूर्यबाला के कथासाहित्य में नारी के विविध रूप

8.4.1 माता

8.4.2 पत्नी

8.4.3 प्रेमिका

8.4.4 बेटी

8.4.5 बहन

8.4.6 सहेली

8.5 सूर्यबाला के कथासाहित्य में नारी शोषण

8.5.1 कामकाजी नारी का शोषण

8.5.2 घरेलू नारी का शोषण

8.5.3 विधवा नारी का शोषण

8.5.4 यौन शोषण

8.5.5 बाल विवाह

8.5.6 बहुपत्नित्व प्रथा

8.5.7 दहेज प्रथा

8.5.8 अनमेल विवाह

8.6 नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक संदर्भ

8.7 पुरुष प्रधान व्यवस्था में नारी

8.8 सूर्यबाला के कथा साहित्य में स्त्री शिक्षा के प्रति जागृति

8.9 सूर्यबाला के कथा साहित्य में नारी अस्मिता

8.10 समकालीन महिला कथाकार

8.11 निष्कर्ष

नवम अध्याय- उपसंहार

उपलब्धियाँ, सीमाएँ एवं संभावनाएँ

परिशिष्ट

- ❖ आधारग्रंथ
- ❖ सहायक ग्रंथ